# सहायक प्राध्यापक परीक्षा–2024
## द्वितीय प्रश्न–पत्र
## पाठ्यक्रम– हिन्दी

इकाई – 1

**हिन्दी भाषा – उद्भव, विकास और स्वरूप –**

- हिंदी भाषा का उद्भव एवं अपभ्रंश के क्षेत्रीय रूप।
- हिंदी प्रदेश उपभाषाएँ तथा बोलियाँ – अवधी, व्रज, बघेली, मालवी, बुंदेली का परिचय, क्षेत्र एवं साहित्यिक योगदान।
- खड़ी बोली का साहित्यिक स्वरूप एवं विकास, सरस्वती तथा अन्य साहित्यिक पत्रिकाओं की भूमिका।
- हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु किए गए प्रयास एवं संस्थाओं की भूमिका। स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी की भूमिका।
- देवनागरी लिपि का विकास, देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएँ।

इकाई – 2

**हिंदी भाषा के विविध रूप –**

- हिंदी का मानकीकरण, मानक हिंदी के विविध रूप, मानक हिंदी की प्रमुख शैलियाँ।
- हिंदी भाषा के विविध रूप संपर्क भाषा, माध्यम भाषा।
- राजभाषा और राष्ट्रभाषा।
- हिंदी की संवैधानिक स्थिति एवं हिंदी का वर्तमान परिदृश्य।
- कंप्यूटर में हिंदी का अनुप्रयोग।

इकाई – 3

**हिन्दी साहित्य का इतिहास –**

- भारतीय ज्ञान परंपरा में हिंदी साहित्य का स्थान।
- हिंदी साहित्य इतिहास लेखन की परंपरा, हिंदी साहित्य इतिहास के प्रमुख आधार।
- हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन, नामकरण, नामकरण की प्रमुख समस्याएँ।
- आदिकाल की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक पृष्ठभूमि और उसका साहित्य पर प्रभाव।
- आदिकाल का जैन साहित्य, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, रासो काव्य, लौकिक साहित्य, प्रमुख प्रवृत्तियाँ तथा प्रमुख कवि।

इकाई – 4

## हिंदी कविता का भक्तिकालीन साहित्य –

- भक्तिकाल की साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भक्तिकाल की प्रमुख धाराएँ एवं प्रवृत्तियाँ – निर्गुण धारा– ज्ञान मार्गी, प्रेम मार्गी, सगुण धारा– राम भक्तिधारा, कृष्ण भक्तिधारा।
- संतकाव्य परंपरा – वैचारिक आधार, सामाजिक अवदान, प्रमुख संत कवि, कबीर, दादू एवं नानक का समाज दर्शन, भक्तिभावना, रहस्य भावना और प्रासंगिकता।
- सूफी काव्य परंपरा –प्रमुख प्रवृत्तियाँ, सूफ़ी साहित्य का सामाजिक अवदान एवं प्रमुख कवि – जायसी, कुतुबन एवं मंझन।
- सगुण काव्य परंपरा– राम भक्तिधारा, हिंदी का राम काव्य, तुलसीदास की भक्तिभावना, समन्वय भावना, तुलसी की रामराज्य की परिकल्पना, तुलसी साहित्य की सामाजिक उपादेयता, तुलसी की लोकमंगल दृष्टि। कृष्ण भक्तिधारा, प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि, गीतिकाव्य परंपरा और हिंदी कृष्ण काव्य, सूरदास की भक्ति भावना, वात्सल्य वर्णन, भ्रमरगीत सार का महत्व। कृष्ण भक्तिधारा के विभिन्न संप्रदाय – निम्बार्क, राधावल्लभ, हरिदासी, पुष्टिमार्ग।
- रचनाएँ – कबीर ग्रंथावली, संपादक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, साखी/पद संख्या 160 से 210 तक। जायसी ग्रंथावली, संपादक रामचन्द्र शुक्ल – नागमती वियोग वर्णन

  गोस्वामी तुलसीदास– रामचरित मानस बालकाण्ड– दोहा क्रमांक– 01 से 15 तक (गुरू–वंदना, संत–वंदना, जीव–वंदना, रामभक्तिमयी कविता की वंदना, नाम महिमा)

  अयोध्याकाण्ड–दोहा क्रमांक 296 से 316 तक (श्रीराम–भरत संवाद, चित्रकूट भ्रमण, श्रीराम का भरत को पादुका देकर भरत की विदाई),

  अरण्यकाण्ड–दोहा क्रमांक 33 से 36 तक (शबरी पर कृपा, नवधा भक्ति उपदेश),

  किष्किन्धाकाण्ड–दोहा क्रमांक 13 से 17 तक (वर्षा ऋतु एवं शरद ऋतु वर्णन)

  सुंदरकाण्ड–दोहा क्रमांक 39 से 49 तक (विभीषण का भगवान राम की शरण में जाना, रावण का दूत भेजना, लक्ष्मण द्वारा रावण को पत्र भेजना)

  लंकाकाण्ड–दोहा क्रमांक 10 से 12 तक (मंदोदरी का रावण को समझाना, सुबेल पर्वत पर श्रीराम और चंद्रोदय वर्णन),

  उत्तरकाण्ड–दोहा संख्या 19 से 24 तक (राम राज्य वर्णन) दोहा क्रमांक 120 से 126 तक (गरूड़जी के सात प्रश्न और भजन महिमा)

  सूरदास – भ्रमरगीत सार, संपादक – रामचन्द्र शुक्ल (पद संख्या 20 से 70 तक)

इकाई–5

हिंदी कविता का रीतिकालीन साहित्य –

- रीतिकाल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक पृष्ठभूमि, रीति शब्द की व्याख्या, रीतिकाल की प्रवृत्तियाँ, रीतिकाल का मुक्तक एवं प्रबंध काव्य।
- रीतिबद्ध काव्य धारा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि – केशव, चिंतामणि, पद्माकर, सेनापति।
- रीतिसिद्ध काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि – बिहारी ।
- रीतिमुक्त काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि – घनानंद, आलम, बोधा, ठाकुर एवं राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख कवि – भूषण।
- रचनाएँ – केशव – रामचंद्रिका से अंगद–रावण संवाद।
  बिहारी – बिहारी सतसई, संपादक – जगन्नाथदास रत्नाकर, चयनित दोहा संख्या– 01, 11, 19, 20, 21, 25, 28, 31, 32, 36, 37, 38, 39, 41, 43, 51, 52, 57, 59, 60 (20 दोहे )
  घनानंद कवित्त – संपादक– विश्वनाथ–प्रसाद मिश्र (प्रारंभिक 25 पद)
  भूषण ग्रंथावली – संपादक– आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (आरंभिक 25 पद)

इकाई–6

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल (काव्य) –

- आधुनिक काल की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि, भारतीय जागरण (रेनासां), भारतेंदु युग, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि एवं रचनाएँ।
- द्विवेदी युग की प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि एवं रचनाएँ। छायावाद – सीमांकन, नामकरण एवं परिवेश, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि एवं रचनाएँ। राष्ट्रीय काव्यधारा एवं प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि।
- प्रगतिवाद उदय के कारण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं कवि, प्रयोगवाद – प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं तारसप्तक के प्रमुख कवि।
- नई कविता, समकालीन कविता, विशेषताएँ, प्रमुख कवि एवं रचनाएँ।
- रचनाएँ – मैथिलीशरण गुप्त – भारत भारती से अतीत खंड एवं साकेत का नवम् सर्ग
  जयशंकर प्रसाद – कामायनी से चिंता, श्रद्धा एवं इड़ा सर्ग
  निराला – राम की शक्तिपूजा, बादल राग, जागो फिर एक बार (कविताएँ)
  दिनकर – परशुराम की प्रतीक्षा, कुरुक्षेत्र का सातवाँ सर्ग
  अज्ञेय – असाध्य वीणा, नदी के द्वीप (कविताएँ)
  केदारनाथ अग्रवाल– फूल नहीं रंग बोलते हैं (कविता संग्रह)
  दुष्यन्त कुमार – साए में धूप (गज़ल संग्रह)
  कुँवर नारायण – आत्मजयी (काव्य)
  नागार्जुन – बादल को घिरते देखा है, अकाल और उसके बाद, कालिदास सच–सच बतलाना (कविताएँ)।

इकाई–7

**हिंदी साहित्य का आधुनिक काल (गद्य) –**

- हिंदी गद्य का उद्भव और विकास, भारतेंदुयुगीन गद्य की प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख रचनाकार, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं सरस्वती पत्रिका का हिंदी गद्य के विकास में योगदान।
- स्वतंत्रता पूर्व के हिंदी गद्य साहित्य एवं स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं का विकास।
- हिंदी उपन्यास का उद्भव और विकास – गोदान (मुंशी प्रेमचंद), मानस का हंस (अमृतलाल नागर), बाणभट्ट की आत्मकथा (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी), त्यागपत्र (जैनेन्द्र)।
  हिंदी कहानी का उद्भव और विकास – टोकरी भर मिट्टी (माधवराव सप्रे), उसने कहा था (चंद्रधर शर्मा गुलेरी), नशा (मुंशी प्रेमचंद), पुरस्कार (जयशंकर प्रसाद), तीसरी कसम (फणीश्वरनाथ रेणु), परिंदे (निर्मल वर्मा), वापसी (उषा प्रियंवदा), खोई हुई दिशाएँ (कमलेश्वर), कोसी का घटवार (शेखर जोशी), गदल (रांगेय राघव) ।
- हिंदी निबंध, नाटक और आलोचना का स्वरूप, उद्भव एवं विकास, प्रकार, प्रमुख निबंधकार, प्रमुख नाटककार एवं प्रमुख आलोचक। निबंध – आचरण की सभ्यता (सरदार पूर्ण सिंह), मेरी असफलताएँ (बाबू गुलाबराय), करुणा (आचार्य रामचंद्र शुक्ल), देवदारु (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी), एक लम्बी कविता का अंत (मुक्तिबोध), मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (आचार्य विद्यानिवास मिश्र)

  आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना पद्धति, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी की आलोचना पद्धति, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना पद्धति, डॉ. नगेन्द्र की आलोचना पद्धति, अंधेर नगरी (भारतेंदु हरिश्चंद्र), चन्द्रगुप्त (जयशंकर प्रसाद), लहरों के राजहंस (मोहन राकेश), अंधा युग (धर्मवीर भारती), कोणार्क (जगदीशचन्द्र माथुर)
  गद्य की अन्य विधाएँ – रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत, डायरी, रिपोर्ताज एवं पत्र साहित्य का स्वरूप, उद्भव एवं विकास एवं इन कथेतर गद्य विधाओं के प्रमुख रचनाकार। रचनाएँ – महादेवी वर्मा – पथ के साथी (संस्मरणात्मक रेखाचित्र), अज्ञेय–अरे यायावर रहेगा याद (यात्रा वृतान्त)

इकाई–8

**काव्यशास्त्र –**

- भारतीय काव्यशास्त्र की अवधारणा, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, शब्दशक्ति, रस संप्रदाय, रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण, रस के प्रमुख प्रकार।
- अलंकार सिद्धांत, अलंकारवादी आचार्य, अलंकारों के प्रमुख प्रकार, ध्वनि सिद्धांत।
- रीति सिद्धांत, काव्य के गुण एवं दोष, वक्रोक्ति सिद्धांत, औचित्य सिद्धांत।
- पाश्चात्य काव्य सिद्धांत – प्लेटो का काव्य सिद्धांत, अरस्तू का अनुकरण एवं विरेचन सिद्धांत, लौंजाइनस का उदात्त सिद्धांत, विलियम वर्ड्सवर्थ का काव्य भाषा सिद्धांत, कॉलरिज का कल्पना सिद्धान्त, टी. एस. इलियट का परम्परा का सिद्धान्त एवं निर्वैक्तिकता का सिद्धान्त।
- स्वच्छंदतावाद, काव्य का अन्य कलाओं से संबंध, बिम्ब एवं प्रतीक। महाकाव्य, गीतिकाव्य, दृश्यकाव्य का स्वरूप।

इकाई–9

**मध्यप्रदेश का हिंदी साहित्य**

- मध्यप्रदेश का हिंदी साहित्य एवं प्रमुख रचनाकार।
- प्रमुख कवि – माखनलाल चतुर्वेदी (कैदी और कोकिला, बलि पंथी के लिए, पुष्प की अभिलाषा), सुभद्रा कुमारी चौहान (वीरों का कैसा हो वसंत, झाँसी की रानी, जलियाँ वाला बाग में वसंत), बालकृष्ण शर्मा नवीन (विप्लवगान, कुवि कुछ ऐसी तान सुनाओ), शिवमंगल सिंह 'सुमन' (तूफानों की ओर घुमा दो नाविक, मिट्टी की बारात, पर आँखें नहीं भरी), भवानी प्रसाद मिश्र (सतपुड़ा के घने जंगल, सन्नाटा, गीतफरोश), श्रीकृष्ण सरल (मैं फूल नहीं काँटे अनियारे लिखता हूँ, मैं अमर शहीदों का चारण, देश से प्यार, शहीद), मुक्तिबोध (कहने दो उन्हें जो यह कहते है, ब्रम्हराक्षस)।
- शरद जोशी के प्रतिनिधि व्यंग्य, रमेशचन्द्र शाह – अकेला मेला (डायरी)।
- मध्य प्रदेश की प्रमुख हिन्दी सेवी साहित्यिक संस्थाएँ – मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, निराला सृजन पीठ, मुक्तिबोध सृजनपीठ, प्रेमचंद सृजन पीठ, तुलसी अकादमी।

इकाई–10

**लोक साहित्य एवं जनजातीय साहित्य –**

- मध्यप्रदेश का लोक साहित्य – लोककथाएँ, लोकगीत, लोकगाथाएँ, लोक नाट्य, लोक कहावतें एवं प्रकीर्ण साहित्य।
- मालवा का लोक साहित्य प्रमुख कवि और रचनाएँ, निमाड़ी का लोक साहित्य, प्रमुख कवि और रचनाएँ।
- बुन्देलखंड का लोक साहित्य, प्रमुख कवि और रचनाएँ, बघेली का लोक साहित्य, प्रमुख कवि और रचनाएँ।
- लोक कलाओं के संरक्षण में शासकीय संस्थाओं की भूमिका।
- जनजातीय साहित्य के संरक्षण – संवर्द्धन में शासकीय संस्थाओं की भूमिका।

***